1227518

AECHN2.1

Reg. No. | | | | | | | | |

II Semester B.A.Degree Examination July/August - 2024

LANGUAGE HINDI

DAK BANGLA UPANYAS, PRAYOJAN MULAK HINDI AUR SANSKSHEPAN

(NEP Scheme Under AECC (F+R) 2020-2021 Onwards)

Paper - II

Time : 2½ Hours **Maximum Marks : 60**

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य मे लिखिए। **(10×1=10)**

St. Francis College LIBRARY Koramangala, Bengaluru-34

1) इरा के पति का नाम क्या था?
2) नाटक समारोह कहाँ हुआ था?
3) नौकरानियों के हाथो में कौन पली थी?
4) बतरा की दिनचर्या किसके आने के बाद बदल गई थी?
5) इरा को किससे ईर्ष्या होती थी?
6) डॉ चन्द्रमोहन की बहन कहाँ रहती थी?
7) 'डाक बंगला' उपन्यास के उपन्यासकार का नाम लिखिए।
8) कितनें बरसों के बाद विमल जेल से लौटा था?
9) विमल की मृत्यु किस रोग से हुई थी?
10) 'किसकी मृत्यु के साथ ही इरा के जीवन का करुण अध्याय समाप्त हो गया था?

II. निम्नलिखित अवतयरणों मे सें किन्ही दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(2×7=14)**

1) "अकेलेपन के दर्द में झिलमिलाती यादें न होती तो
यह दुनियां कितनी उदास और खामोश होती।"

2) "किसी भी आदमी की आड़ में-चाहे
वह आदमी काठ का ही हो ...... अच्छि
से अच्छि और बुरी से बुरी जिन्दगी
शान से चल सकती है, पर बगैर
आदमी के न वह अच्छी जिन्दगी जी
सकती है और न बुरी।"

[P.T.O.

Scanned with OKEN Scanner

3) "हर मन पवित्रता का भूखा होता है
मेरा मतलब दकियानूसी पवित्रता से
नहीं है। मैं उस बोध की बात कर
रही हूँ जो एकाधिपत्य के आस पास की चीज है।"

III. 'डाक बंगला' उपन्यास का सारांश अपने शब्दों में लिखते हुए विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (1×16=16)

(अथवा)

'डाक बंगला' उपन्यास नारी त्रासदी एवं संघर्ष की एक कहानी हैं।'' स्पष्ट कीजिए।

IV. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए। (1×5=5)

1) वतरा।

2) सोलंकी।

V. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2×4=8)

1) प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरुप को स्पष्ट कीजिए।

2) पयोजनमूलक हिन्दी की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

3) प्रयोजनमूलक हिन्दी की परिभाषा और अर्थ लिखिए।

VI. निम्नलिखित गद्यांश को एक तिहाई भाग में लिखकर उचित शीर्षक दीजिए। (1×7=7)

आज अनुवाद भी एक स्वतंत्र व्यवसाय के रुप में स्थापित हो रहा है। जो अनुवादक किसी कारणवंश सरकारी नौकरी नहीं कर पाते अथवा करना नहीं चाहते वे अनुवाद को एक स्वतंत्र व्यवसाय के रुप में अपनाकर आत्म सम्मान की जिन्दगी जी सकते है। अनुवाद कार्य से वे अपना जी विकोपार्जन कर सकते है। प्रकाशक इनसे विविध श्रेष्ठ साहित्य-कृतियों के अनुवाद करवा लेते हैं। और उसके प्रतिदान में उन्हें पारिश्रामिक मिलता है। अपनी सीमा में अनुवाद आज एक स्वतंत्र व्यवसाय के क्षेत्र में उभर रहा है। अपने ढंग से जीवन जीना सुलभ हो इसके लिए अनुवाद क्षेत्र को एक स्वतंत्र व्यवसाय के रुप में अपनाना निश्चय ही उपयुक्त है।

Scanned with OKEN Scanner